

प्रीति, 8 मार्च 1982.

प्रिय मृणाल पांडे -

आज साल, देश के सगावों से बेहद बेचैन हो। इंदिरा गांधी की हत्या के बाद सिंकरों का कलह आरंभ, और फिर नेपाल का दावा। यहां (इस असह्य लगा और यह जानते हुए भी कि मैं किसी फल व आसुरी, गणकी फायदे के नुक़्क का सहारा बिखरूँ कि नेपाल पहुँच गया। किसी से मिला भारत भवन, युनियन कावाइड, पुराना नेपाल शेल्वे स्टेशन, ^{मैंने बिना किसी} और ~~मैंने~~ भारत भवन कि है देवा धई किसी से मिले। अशोक, खाना, ^{बिना} धुँड्ड, ओमप्रकार। वृत्तचित्र देखें। उनके थके आउ ~~मैंने~~ अगर सौची = अपमानित मनुष्य भी।...

लगाता हूँ यह सड़प ^{मैंने} पता लगा कि आप व दिल्ली में हैं। आपसे भी मिलना था। बख़्शें मे एक ओगो शाह की तैयारी है जिसमें 92 शीक चित्रों के साथ कई लेख अख़बरी व कासीसी में छापने की योजना है। खासता है कि इनके साथ आपका लेख "व्यवस्थित अख़बार का आरंभ संसार" दिखे मे क्या लगे और इसका इजाजत आपसे अख़बरी थी। अशोक राजपूरी से आपका पता जाना का लिखिए है और आशा है कि आप सहमत होंगी। ~~मैंने भी समझा है कि कोरे से और सहा व rakis + son~~ ~~मैंने भी समझा है कि कोरे से और सहा व rakis + son~~ ~~मैंने भी समझा है कि कोरे से और सहा व rakis + son~~

अगर है कि आप ^{मैंने} पत्रिका ~~मैंने~~ सम्पादन का है है। किसी को कुछ समय देती है। अपने थकने के कुछ चित्र जिन्हें आपके का मोटापड़े पर लटका रहे देखें थे।

आतमी

पत्र दे और समय निकाल का अपने हालात। आपका (म)